• कहानी माला 11
अन्तरिक्षी
• पंच परमेश्वर

# पंच परमेश्वर

● मुंशी प्रेमचंद

## एक

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी में गाढ़ी मित्रता थी। साझे में खेती होती थी। कुछ लेन-देन में भी साझा था। एक को दूसरे पर अटल विश्वास था। जुम्मन जब हज करने गये थे, तब अपना घर अलगू को सौंप गये थे और अलगू जब कभी बाहर जाते, तब जुम्मन पर अपना घर छोड़ जाते थे। उनमें न खान-पान का व्यवहार था, न धर्म का नाता, केवल विचार मिलते थे। मित्रता का मूल मन्त्र भी यही है।

इस मित्रता का जन्म उसी समय हुआ, जब दोनों मित्र बालक ही थे और जुम्मन के पिता जुमराती उन्हें शिक्षा प्रदान करते थे।

## दो

जुम्मन शेख़ की एक बूढ़ी खाला (मौसी) थी। उसके पास कुछ थोड़ी-सी जायदाद थी। परन्तु उसके निकट रिश्तेदार में कोई न था। जुम्मन ने लम्बे-चौड़े वादे करके वह जायदाद अपने नाम चढ़वा ली थी। जब तक दान-पात्र की रजिस्टरी न हुई थी, तब तक खालाजान का खूब आदर-सत्कार किया गया। हलुवे-पुलाव की वर्षा-सी की गयी, पर रजिस्टरी की मुहर ने इन खातिरदारियों पर भी मानो मुहर लगा दी। जुम्मन की पत्नी करीमन रोटियों के साथ कड़वी बातों के कुछ तेज़-तीखे सालन भी देने लगी।

बुढ़िया न जाने कब तक जियेगी? दो-तीन बीघे ऊसर क्या दे दिया है, मानो मोल ले लिया है। बघारी दाल के बिना रोटियाँ नहीं उतरतीं। जितना रुपया इसके पेट में झोंक चुके, उतने से तो अब तक एक गाँव मोल ले लेते।

कुछ दिन ख़ालाजान ने सुना और सहा; पर जब न सहा गया, तब एक दिन ख़ाला ने जुम्मन से कहा — बेटा! तुम्हारे साथ मेरा निबाह न होगा। तुम मुझे रुपया दे दिया करो, मैं अपना अलग पका-खा लूँगी।

जुम्मन ने उत्तर दिया — रुपया क्या यहाँ फलते हैं?

ख़ाला ने कहा — मुझे कुछ रूखा-सूखा चाहिए भी कि नहीं? जुम्मन ने गंभीर स्वर में जवाब दिया — तो कोई यह थोड़े ही समझा था कि मौत से लड़कर आयी हो?

ख़ाला बिगड़ गयीं। उन्होंने पंचायत करने की धमकी दी। जुम्मन हँसे। वे बोले — हाँ, ज़रूर पंचायत करो। फ़ैसला हो जाए। मुझे भी यह रात-दिन की खटपट पसन्द नहीं।

पंचायत में किसकी जीत होगी, इस बारे में जुम्मन को कुछ भी शक न था। आसपास का ऐसा कौन था, जो उनको शत्रु बनाने का साहस कर सके? किसमें इतना बल था, जो उनका सामना कर सके? आसमान के फ़रिश्ते तो पंचायत करने आयेंगे ही नहीं।

## तीन

इसके बाद कई दिन तक बूढ़ी ख़ाला हाथ में लकड़ी लिये आस-पास के गाँवों में दौड़ती रहीं, कमर झुककर कमान हो गयी थी। एक-एक पग चलना दूभर हो गया था। मगर बात आ पड़ी थी, उसका फैसला करना ज़रूरी था।

विरला ही कोई भला आदमी होगा, जिसके सामने बुढ़िया ने दुःख के आँसू न बहाये हों। किसी ने तो यों ही ऊपरी मन से हूँ-हाँ करके टाल दिया। किसी ने इस अन्याय पर ज़माने को गालियाँ दीं। कुछ ऐसे सज्जन भी थे जो ख़ाला की झुकी हुई कमर, पोपला मुँह, सन के से बालों की हँसी उड़ाने लगे। ऐसे न्यायप्रिय, दयालु लोग बहुत कम थे, जिन्होंने उस

अबला के दुखड़े को गौर से सुना हो और उसको सान्त्वना दी हो। चारों ओर से घूम-घामकर बेचारी अलगू चौधरी के पास आयी। लाठी पटक दी और दम लेकर बोली — बेटा, तुम भी थोड़ी देर के लिए पंचायत में चले आना।

अलगू — यों आने को मैं आऊँगा, मगर पंचायत में मुँह न खोलूँगा।

ख़ाला — क्यों बेटा?

अलगू — अब इसका क्या जवाब दूँ? अपनी खुशी! जुम्मन मेरे पुराने मित्र हैं। उनसे बिगाड़ नहीं कर सकता।

खाला — बेटा, क्या बिगाड़ के भय से ईमान की बात न कहोगे?

हमारे सोये हुए धर्म-ज्ञान की सारी सम्पत्ति लुट जाये तो उसे ख़बर नहीं होती, परन्तु ललकार सुनकर वह सचेत हो जाता है। फिर उसे कोई जीत नहीं सकता। अलगू उस सवाल का कोई जवाब न दे सके। पर उनके हृदय में यह शब्द गूँज रहे थे :

"क्या बिगाड़ के भय से ईमान की बात न कहोगे?"

## चार

संध्या समय एक पेड़ के नीचे पंचायत बैठी। जब सूर्य अस्त हो गया और चिड़ियों की कलरव-युक्त पंचायत पेड़ों पर बैठी, तब वहाँ भी पंचायत आरम्भ हुई। फ़र्श की एक-एक अंगुल ज़मीन भर गयी। निमन्त्रित महाशयों में से केवल वही लोग पधारे थे, जिन्हें जुम्मन से अपनी कुछ क़सर निकालनी थी।

पंच लोग बैठ गये तो बूढ़ी खाला ने उनसे विनती की — पंचों, आज तीन साल हुए, मैंने अपनी सारी जायदाद अपने भानजे के नाम लिख दी थी। इसे आप लोग जानते ही होंगे। जुम्मन ने मुझे रोटी-कपड़ा देना कबूल किया था। साल भर मैंने इसके साथ रो-धोकर काटा, पर अब रात-दिन

का रोना नहीं सहा जाता। मुझे न पेट भर रोटी मिलती है और न तन का कपड़ा! बेकस बेवा हूँ। कचहरी-दरबार कर नहीं सकती। तुम्हारे सिवाय और किसे अपना दुःख सुनाऊँ? तुम लोग जो राह निकाल दो, उसी राह पर चलूँ। अगर मुझमें कोई ऐब देखो, मेरे मुँह पर थप्पड़ मारो। जुम्मन में बुराई देखो तो उसे समझाओ। क्यों एक बेकस की आह लेता है? पंचों का हुक्म सर-माथे पर चढ़ाऊँगी।

रामधन मिश्र बोले — जुम्मन मियाँ, किसे पंच बदते हो? अभी से इसका निपटारा कर लो। फिर जो कुछ पंच कहेंगे, वही मानना पड़ेगा।

जुम्मन को इस समय सदस्यों में विशेषकर वही लोग दीख पड़े, जिनसे किसी-न-किसी कारण उसका वैर था। इसलिए उन्होंने क्रोध से कहा — खाला़जान! तुम्हारी बन पड़ी है, जिसे चाहो पंच बदो।

खाला़जान जुम्मन के आक्षेप को समझ गयीं। वह बोलीं — बेटा! खुदा से डरो। पंच न किसी के दोस्त होते हैं, न किसी के दुश्मन! कैसी बात कहते हो? और तुम्हारा किसी पर विश्वास न हो तो जाने दो, अलगू चौधरी को तो मानते हो? लो, मैं उन्हीं को सरपंच बदती हूँ।

जुम्मन शेख आनन्द से फूल उठे, परन्तु भावों को छिपाकर बोले — चौधरी ही सही। मेरे लिए जैसे रामधन मिश्र, वैसे अलगू।

अलगू इस झमेले में फँसना नहीं चाहते थे। वे कन्नी काटने लगे। बोले — खाला़! तुम जानती हो कि मेरी जुम्मन से गाढ़ी दोस्ती है।

खाला़ ने गम्भीर स्वर से कहा — बेटा! दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नहीं बेचता। पंच के दिल में खुदा बसता है। पंचों के मुँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ़ से निकलती है।

अलगू चौधरी सरपंच हुए।

अलगू चौधरी बोले — जुम्मन शेख! हम और तुम पुराने दोस्त हैं। जब काम पड़ा है, तुमने हमारी मदद की है और हम से भी जो कुछ बन

पड़ा, तुम्हारी सेवा करते रहे हैं। मगर इस समय तुम और बूढ़ी ख़ाला दोनों हमारी निगाह में बराबर हो। तुमको पंचों से जो कुछ अर्ज करना हो, करो।

जुम्मन को पूरा विश्वास था कि अब बाज़ी उसकी है। अलगू यह सब दिखावे की बातें कर रहा है, इसलिए शान्त-चित्त होकर बोले — पंचो! ख़ालाजान मुझसे महीने का ख़र्च अलग माँगती हैं! जायदाद जितनी है, वह पंचों से छिपी नहीं है। उससे इतना मुनाफा नहीं होता कि मैं माहवार ख़र्च दे सकूँ। इसके अलावा हिब्बानामे में माहवार ख़र्च का कोई ज़िक्र नहीं, नहीं तो मैं भूलकर भी इस झमेले में न पड़ता। बस, मुझे यही कहना है।

अलगू चौधरी को हमेशा कचहरी से काम पड़ता था, इसलिए पूरा कानूनी आदमी था। उसने जुम्मन से बहस करनी आरम्भ की। एक-एक प्रश्न जुम्मन के हृदय पर हथौड़ी की चोट की तरह पड़ता था। रामधन मिश्र इन प्रश्नों पर मुग्ध हुए जाते थे। जुम्मन चकित था कि अलगू को क्या हो गया है! अभी यह मेरे साथ बैठा हुआ कैसी-कैसी बातें कर रहा था। इतनी ही देर में ऐसी कायापलट हो गयी कि मेरी जड़ खोदने पर तुला हुआ है। न मालूम कब की कसर यह निकाल रहा है? क्या इतने दिनों की दोस्ती कुछ भी काम न आवेगी?

जुम्मन शेख इसी संकल्प-विकल्प में पड़े हुए थे कि इतने में अलगू ने फैसला सुनाया — जुम्मन शेख! पंचों ने इस मामले पर विचार किया। उन्हें यह नीतिसंगत मालूम होता है कि ख़ालाजान को माहवार ख़र्च दिया जाये। हमारा विचार है कि ख़ाला की जायदाद से इतना मुनाफ़ा अवश्य होता है कि माहवार ख़र्च दिया जा सके। बस, यही हमारा फ़ैसला है। अगर जुम्मन को ख़र्च देना मंजूर न हो, तो हिब्बानामा रद्द समझा जाय।

## पाँच

यह फ़ैसला सुनते ही जुम्मन सन्नाटे में आ गये। जो अपना मित्र हो, वह शत्रु का-सा व्यवहार करे और गले पर छुरी फेरे! इसे समय के हेर-फेर के सिवाय और क्या कहें? जिस पर पूरा भरोसा था, उसने समय पड़ने पर धोखा दिया। यही कलियुग की दोस्ती है!

मगर रामधन मिश्र और अन्य पंच अलगू चौधरी की इस नीतिपरायणता की प्रशंसा जी खोलकर कर रहे थे। वे कहते थे — इसी का नाम पंचायत है। दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया। दोस्ती, दोस्ती की जगह है, किन्तु धर्म का पालन करना मुख्य है।

इस फ़ैसले ने अलगू और जुम्मन की दोस्ती की जड़ हिला दी। अब वे साथ-साथ बातें करते नहीं दिखाई देते। इतना पुराना मित्रतारूपी वृक्ष सत्य का एक हल्का झोंका भी न सह सका। सचमुच वह बालू ही की ज़मान पर खड़ा था!

अब वे मिलते-जुलते थे, मगर उसी तरह, जैसे तलवार से ढाल मिलती है।

जुम्मन के चित्त में मित्र की कुटिलता आठों पहर खटका करती थी। उसे हर घड़ी यह चिन्ता रहती कि किसी तरह बदला लेने का अवसर मिले।

## छह

अच्छे कामों की सिद्धि में बड़ी देर लगती है, पर बुरे कामों की सिद्धि में यह बात नहीं। जुम्मन को भी बदला लेने का अवसर जल्दी मिल गया। पिछले साल अलगू चौधरी बटेसर से बैलों की एक बहुत अच्छी जोड़ी मोल लाये थे! बैल पछाहीं जाति के सुन्दर, बड़ी-बड़ी सींगोंवाले थे। दैवयोग से जुम्मन की पंचायत के एक महीने बाद इस जोड़ी का एक बैल मर गया।

अलगू को शक हुआ कि जुम्मन ने बैल को जहर दिला दिया है। चौधराइन ने जुम्मन पर ही इस दुर्घटना का दोषारोपण किया। उसने कहा — जुम्मन ने कुछ करा दिया है।

अब अकेला बैल किस काम का? उसका जोड़ा बहुत ढूँढ़ा गया, पर न मिला आखिर यह सलाह ठहरी कि इसे बेच डालना चाहिए। गाँव में एक समझू साहू थे, इक्का गाड़ी हाँकते थे। गाँव से गुड़, घी लादकर वे मण्डी ले जाते, मण्डी से तेल-नमक भर लाते और गाँव में बेचते। इस बैल पर उनका मन लहराया। बैल देखा, गाड़ी में दौड़ाया, बाल भौंरी की पहचान करायी, मोल-तोल किया और उसे लाकर द्वार पर बाँध ही दिया। एक महीने में दाम चुकाने का वादा ठहरा। चौधरी को भी गरज थी ही, घाटे की परवाह न की।

समझू साहू ने नया बैल पाया तो लगे रगेदने। वे दिन में तीन-तीन, चार-चार खेपें करने लगे। न चारे की फिक्र थी, न पानी की, खेपों से

काम था। मण्डी ले गये, वहाँ कुछ सूखा भूसा सामने डाल दिया। बेचारा जानवर अभी दम भी न लेने पाया कि फिर जोत दिया। अलगू चौधरी के घर बैलराम को रातिब, साफ पानी, दली हुई अरहर की दाल और भूसे के साथ-साथ खली और यही नहीं, कभी-कभी घी का स्वाद भी चखने को मिल जाता था। कहाँ वह सुख-चैन, कहाँ यह आठों पहर की खपन! महीने भर में ही वह पिस-सा गया। इक्के का जुवा देखते ही उसका लोहू सूख जाता था। हड्डियाँ निकल आयी थीं।

एक दिन चौथी खेप में साहूजी ने दूना बोझ लादा। दिन भर का थका जानवर, पैर न उठते थे। उस पर साहूजी कोड़े फटकारने लगे। बैल कुछ दूर दौड़ा और फिर बस, चाहा कि ज़रा दम ले लूँ, पर साहूजी को जल्द घर पहुँचने की फिक्र थी। अतएव उन्होंने कई कोड़े बड़ी निर्दयता से झटकारे। बैल ने एक बार फिर ज़ोर लगाया। पर अबकी बार शक्ति ने

जवाब दे दिया। वह धरती पर गिर पड़ा और ऐसा गिरा कि फिर न उठा। मारे गुस्से के साहूजी मरे बैल को कोसने लगे, अभागे! तुझे मरना ही था तो घर पहुँच कर मरता। ससुरा बीच रास्ते में ही मर रहा! अब गाड़ी कौन खींचे? इस तरह साहूजी खूब जले-भुने। कई बोरे गुड़ और कई पीपे घी उन्होंने बेचा था, दो-ढाई सौ रुपये कमर में बँधे थे। इसके अलावा गाड़ी पर कई बोरे नमक था, उसे छोड़कर जा भी नहीं सकते थे। लाचार बेचारे गाड़ी पर ही लेट गये। वहीं रतजगा करने की ठान ली, चिलम पी, गाया, फिर हुक्का पिया। इस तरह साहूजी आधी रात तक नींद को बहलाते रहे। अपनी जान में तो वे जागते ही रहे, पर पौ फटते ही जो नींद टूटी और कमर पर हाथ रखा तो थैली ग़ायब! घबराकर इधर-उधर देखा, तो कई कनस्तर तेल भी नदारद! अफ़सोस में बेचारा सिर पीटने लगा और पछाड़ खाने लगा। रोते-बिलखते घर पहुँचा।

इस घटना को हुए कई वर्ष बीत गये। अलगू जब अपने बैल के दाम माँगते, तब साहूजी और सहुआइन दोनों ही झल्लाये कुत्तों की तरह चढ़ बैठते और अंड-बंड बकने लगते — वाह! यहाँ तो सारे जन्म की कमाई लुट गयी, सत्यानास हो गया, इन्हें दामों की पड़ी है। मुर्दा बैल दिया था, उस पर दाम माँगने चले हैं!

इस तरह फटकारें सुनकर बेचारे चौधरी अपना-सा मुँह लेकर लौट आते। एक बार वे भी गरम पड़े। साहूजी बिगड़कर लाठी ढूँढ़ने घर चले गये। हाथापाई की नौबत आ पहुँची। शोर-गुल सुनकर गाँव के भले मानुष जमा हो गये। उन्होंने दोनों को समझाया। साहूजी को दिलासा देकर घर से निकाला। वे परामर्श देने लगे कि इस तरह से सिरफुटौबल से काम न चलेगा। पंचायत करा लो।

## सात

पंचायत की तैयारियाँ होने लगीं। दोनों पक्षों ने अपने-अपने दल बनाने

शुरू किये। इसके बाद तीसरे दिन उसी वृक्ष के नीचे फिर पंचायत बैठी। वही संध्या का समय था। खेतों में कौवे पंचायत कर रहे थे।

पंचायत बैठ गयी तो रामधन मिश्र ने कहा — अब देरी क्यों? पंचों का चुनाव हो जाना चाहिए। बोलो चौधरी, किस-किसको पंच बदते हो?

अलगू ने दीन भाव से कहा — समझू साहू ही चुन लें।

समझू खड़े हुए और कड़ककर बोले — मेरी ओर से जुम्मन शेख़!

जुम्मन का नाम सुनते ही अलगू चौधरी का कलेजा धक-धक करने लगा, मानो किसी ने अचानक थप्पड़ मार दिया हो। रामधन अलगू के मित्र थे। वे बात को ताड़ गये। पूछा — क्यों चौधरी, तुम्हें कोई उज्र तो नहीं?

चौधरी ने निराश होकर कहा — मुझे क्या उज्र होगा?

अपनी जिम्मेदारी की समझ हमारे बहुत से संकुचित व्यवहारों का सुधारक होता है। जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं, तब यही समझ

हमें रास्ता दिखाने वाली बन जाती है।

जुम्मन शेख़ के मन में भी सरपंच का उच्च स्थान ग्रहण करते ही अपनी ज़िम्मेदारी का डर पैदा हुआ। उसने सोचा, मैं इस वक़्त न्याय और धर्म के सबसे ऊँचे आसन पर बैठा हूँ। मेरे मुँह से इस समय जो कुछ निकलेगा, वह देववाणी के समान है और देववाणी में मेरे मनोविकारों का कदापि समावेश न होना चाहिए। मुझे सत्य से जौ भर टलना उचित नहीं।

पंचों ने दोनों पक्षों से सवाल-जवाब करने शुरू किये। बहुत देर तक दोनों दल अपने-अपने पक्ष का समर्थन करते रहे। इस विषय में तो सब सहमत थे कि समझू को बैल का मूल्य देना चाहिए। परन्तु दो महाशय इस कारण रियायत करना चाहते थे कि बैल के मर जाने से समझू को हानि हुई। इसके प्रतिकूल दो सभ्य मूल्य के अतिरिक्त समझू को कुछ दंड देना चाहते थे, जिससे फिर किसी को पशुओं के साथ ऐसी निर्दयता

करने का साहस न हो। अंत में जुम्मन ने फैसला सुनाया — "अलगू चौधरी और समझू साहू! पंचों ने तुम्हारे मुआमले पर अच्छी तरह विचार किया। समझू को उचित है कि बैल का पूरा दाम दें। जिस वक़्त उन्होंने बैल लिया, उसे कोई बीमारी न थी। अगर उसी समय दाम दे दिया जाता, तो आज समझू उसे फेर लेने का आग्रह न करते। बैल की मृत्यु केवल इस कारण हुई कि उससे बड़ा कठिन परिश्रम कराया गया और उसके दाने-चारे का कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं किया गया।"

अलगू चौधरी फूले न समाये। उठ खड़े हुए और ज़ोर से बोले — पंच परमेश्वर की जय!

चारों ओर से प्रतिध्वनि हुई — पंच परमेश्वर की जय!

प्रत्येक मनुष्य जुम्मन की नीति को सराहता था — इसे कहते हैं न्याय! यह मनुष्य का काम नहीं; पंच में परमेश्वर वास करते हैं। यह उन्हीं की महिमा है। पंच के सामने खोटे को कौन खरा कह सकता है?

थोड़ी देर बाद जुम्मन अलगू के पास आये और उनके गले लिपटकर बोले — भैया, जब से तुमने मेरी पंचायत की, तब से मैं तुम्हारा प्राणघातक शत्रु बन गया था; पर आज मुझे ज्ञात हुआ कि पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नहीं सूझता। आज मुझे विश्वास हो गया कि पंच की जुबान से खुदा बोलता है।

अलगू रोने लगे। इस पानी से दोनों के दिलों का मैल धुल गया। मित्रता की मुरझाई लता फिर हरी हो गयी।

(उर्दू में : 'पंचायत' शीर्षक से 'ज़माना', मई-जून, १९१६ में प्रकाशित;
हिन्दी में : 'सरस्वती', जून, १९१६ में प्रकाशित)

□

## लेखक के बारे में

उपन्यास सम्राट प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी के लमही गाँव में हुआ था। बचपन में वह घर में सभी के लाडले थे। मगर माता-पिता के जल्दी देहान्त हो जाने से उनको जीवन की कठोर परिस्थितियों का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ा। मगर वह इन परेशानियों से घबराये नहीं। उन्होंने बी.ए. पास किया और एक स्कूल में अध्यापक हो गए। हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं के वह अच्छे जानकार थे। अपनी हिन्दी और उर्दू कहानियों के माध्यम से उन्होंने दमन, शोषण और अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलन्द की और सामाजिक कुरीतियों पर करारी चोट करते हुए पाठकों को नई दिशा दी।

उन्होंने 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियाँ, तीन नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें लिखीं तथा ''हंस'' और ''माधुरी'' नामक पत्रिकाओं का संपादन किया।

उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं—''शतरंज के खिलाड़ी'', ''पूस की रात'', ''ईदगाह'', ''दो सखियाँ'' इत्यादि।

उपन्यास—''गबन'', ''गोदान'', ''निर्मला'' आदि।

हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें ऊँचा चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो—जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं। क्योंकि अब और सोना मृत्यु का लक्षण है।

● प्रेमचंद